आम का तेला या फुदका: यह आम का एक प्रमुख कीट है। इसके हरे–मटमैले भूरे प्रौढ़ एवं पीले भूरे फुर्तीले शिशु बौर, कलियों, फूल की डंडियों एवं नई पत्तियों से रस चूसते हैं जिससे ये मुरझाकर सूख जाती हैं। शिशु व प्रौढ़ पत्तियों की निचली सतह पर रहकर ज्यादा हानि करते हैं जिस कारण पत्तियां व कोपलें मुड़ी हुई दिखाई देती हैं। यह कीट पत्तियों पर एक मीठा रस भी छोड़ता है जिससे पत्तियां चिकनी दिखती हैं। इस चिकनाई युक्त पदार्थ के कारण पत्तों पर काली फफूंद की परत बन जाती है जिससे पौधा अपना भोजन पूर्ण मात्रा में नहीं बना सकता । साल में इस कीट की दो पीढ़ियां होती हैं। पहली बौर के समय (मार्च–अप्रैल) तथा दूसरी गर्मी बरसात के मौसम में (जून से अगस्त)। पहली पीढ़ी से ज्यादा हानि पहुंचती है। इस कीट के शिशु व प्रौढ़ पेड़ के तने व टहनियों पर घुमते हुए आसानी से पहचाने जा सकते हैं ।

बचाव के तरीके / सिफारिशें :–

1. बाग ज्यादा घने नहीं लगाने चाहिएं ताकि वृक्षों को ठीक से सूर्य का प्रकाश एवं हवा मिलती रहे। बाग के खरपतवार नियंत्रण में रखें और खेत की जुताई 20–25 दिन के अंतराल पर करते रहें ।
2. बाग में पानी की निकासी ठीक रखें ताकि ज्यादा नमी न रहे।
3. इस कीट का ज्यादा प्रकोप होने पर निम्नलिखित कीटनाशकों का प्रयोग प्रति लीटर पानी में मिलाकर कर सकते हैं ।

क्रमांक	कीटनाशक	मात्रा (मि.ली./ग्राम प्रति लीटर पानी)
1	मैलाथियान 50 प्रतिशत ई.सी.	1 मि.ली.
2	बुप्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस.सी.	1–2 मि.ली.
3	डेल्टामैथ्रिन 02.80 प्रतिशत ई.सी.	0.33 – 0.5 मि.ली.
4	ट्राईफलूमेजोपाइरिम 10 प्रतिशत डब्ल्यू. डब्ल्यू. एस.सी.	0.2 – 0.3 मि.ली.
5	लैम्डा साइहेलोथ्रिन 5 प्रतिशत ई.सी.	0.5 – 1.0 मि.ली.
6	थियोमेथोक्सम 25 प्रतिशत डब्ल्यू. जी.	1 ग्राम
7	पाइमैट्रोजीन 50 प्रतिशत डब्ल्यू. जी.	0.30 ग्राम
8	फलोनिकैमिड 50 प्रतिशत डब्ल्यू. जी.	0.40 ग्राम

आम का मिलीबग : ये मिलीबग आम के अतिरिक्त अंजीर अमरूद, बेर, अनार, नींबू आदि फल वृक्षों को, विशेषकर जो आम के वृक्षों के पास लगे होते हैं, उन्हें भी नुकसान पंहुचाता है। दिसम्बर–जनवरी में अधिक संख्या में मिलीबग के छोट–छोटे अखरोट की तरह भूरे शिशु जमीन के अन्दर अंडों से निकल कर वृक्षों पर चढ़ते हैं तथा पत्तियों की सतह पर एकत्रित हो जाते हैं। नये फुटाव आने पर,

फरवरी में ये पतली डालियों पर जमा हो जाते हैं। विकसित शिशु और प्रौढ़ चपटे, मोटे एवं अंडाकार होते हैं तथा इनके शरीर के ऊपर सफेद रंग का मोम जैसा चूर्ण जमा होता है। यह कीट फरवरी से मई तक बौर वाली टहनियों पर गुच्छों में जमा होकर रस चूसते हैं। परिणामस्वरूप डालियां मुरझा जाती हैं तथा प्रकोपित फूल व फल झड़ जाते हैं । यह कीट भी आम का तेला की तरह मीठा रस (मधुस्राव) छोड़ते हैं जिस पर काले रंग की फफूंद पैदा हो जाती है। वयस्क मादा अप्रैल–मई में पेड़ से नीचे उतर कर भुरभुरी जमीन में अण्डे देती है। यह कीट दिसम्बर से मई तक सक्रिय रहता है जिसमें इसकी एक पीढ़ी होती है। जून से नवम्बर तक यह कीट अण्डों की अवस्था में जमीन के अन्दर रहता है। इस कीट के व्यस्क पेड़ के तने व टहनियों पर घुमते हुए दिखाई देते हैं ।

बचाव के तरीके / सिफारिशें :–

1. इस कीट के शिशुओं को वृक्षों पर चढ़ने से रोकने के लिए भूमि से 0.5–1 मीटर की ऊँचाई पर तने पर 25–30 सें.मी.चौड़ी चिकनी अल्काथीन (250–400 गेज पॉलिथीन) की पट्टी लगाएं।
2. अल्काथीन पट्टी के नीचे एकत्रित कीटों को मारने के लिए 300 मि.ली. क्विनलफॉस 25 ई.सी. को 50 लीटर पानी में मिलाकर प्रति 50 वृक्षों पर (केवल तने व पेड़ के साथ वाली मिट्टी पर) छिड़काव करें।
3. तने, पत्तों व टहनियों आदि पर एकत्रित कीटों को नष्ट करने के लिए 3 मि.ली. क्विनलफॉस 25 ई.सी. को प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें ।
4. वृक्षों के नीचे जमीन को जून–जुलाई में उलट–पलट दें ताकि कीट के अण्डे सूर्य की गर्मी एवं परजीवी शत्रुओं द्वारा नष्ट हो सकें।

नोटः

1. वृक्षों की टहनियां पत्ते आदि भूमि घास या अन्य वनस्पति को नहीं छूने चाहिएं ताकि ये मिलीबग रेंगकर वृक्षों पर न चढ़ सकें।
2. बाग में अन्य फलों, फूलों व जंगली वृक्षों पर भी बैंड (पट्टी) लगाएं।

(उपरोक्त सिफारिशें केन्द्रीय कीटनाशक बोर्ड और पंजीकरण समिति व चौ.च.सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा दी गई हैं)

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नंबरों पर संपर्क करें

9729300525, 8708960883, 8930930874

अनुसंधान निदेशालय
कीट विज्ञान विभाग
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

आम के बौर से रस चुसते हुए तेला

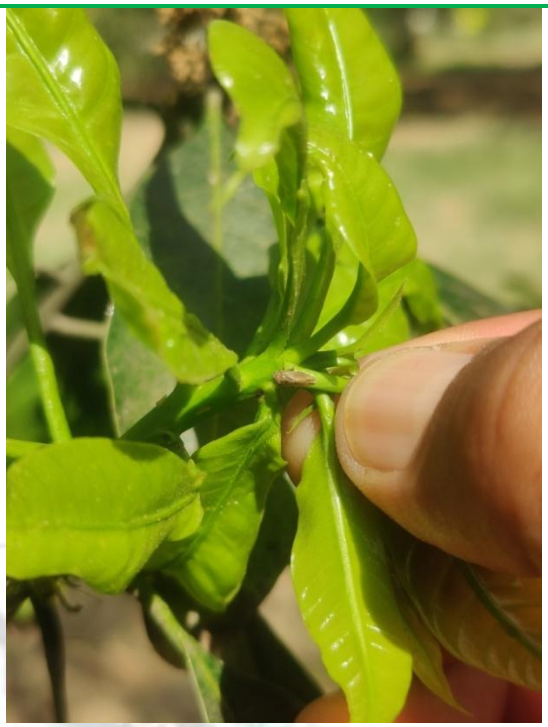

आम का तेला (प्रौढ़)

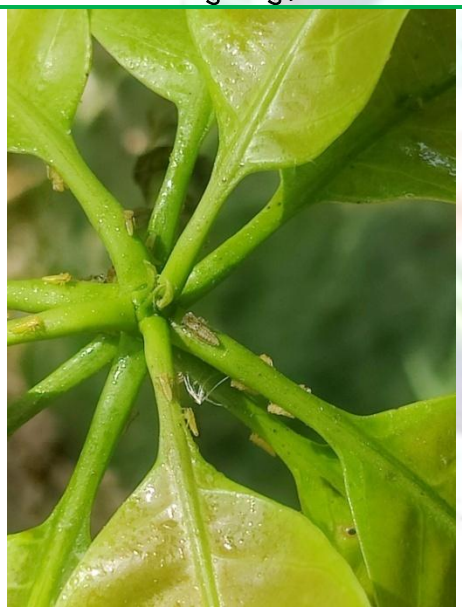

आम का तेला (शिशु व प्रौढ़)

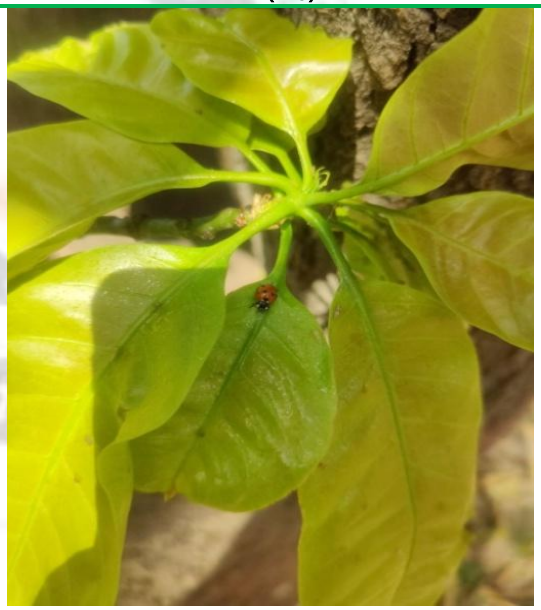

आम का तेला को खाते हुए मित्र कीट
लेडीबर्ड भृंग (मित्र कीट)

आम का मिलीबग	आम का मिलीबग